हिमालय की बेटियाँ

मूल विषय-वस्तु 2

अभी तक मैंने उन्हें दूर से देखा था। बड़ी गंभीर, शांत, अपने आप में खोई हुई लगती थीं। संभ्रांत महिला की भाँति वे प्रतीत होती थीं। उनके प्रति मेरे दिल में आदर और श्रद्धा के भाव थे। माँ और दादी, मौसी और मामी की गोद की तरह उनकी धारा में डुबकियाँ लगाया करता।

परंतु इस बार जब मैं हिमालय के कंधे पर चढ़ा तो वे कुछ और रूप में सामने थीं। मैं हैरान था कि दुबली-पतली गंगा, यही यमुना, यही सतलुज समतल मैदानों से उतरकर विशाल कैसे हो जाती हैं! इनका उछलना और कूदना खिलखिलाकर लगातार हँसते जाना, इनकी यह भाव-भंगी, इनका यह उल्लास कहाँ गायब हो जाता है मैदान में जाकर ? किसी लड़की को जब मैं देखता हूँ, किसी कली पर जब मेरा ध्यान अटक जाता है, तब भी इतना कौतूहल और विस्मय नहीं होता, जितना कि इन बेटियों की बाललीला देखकर!

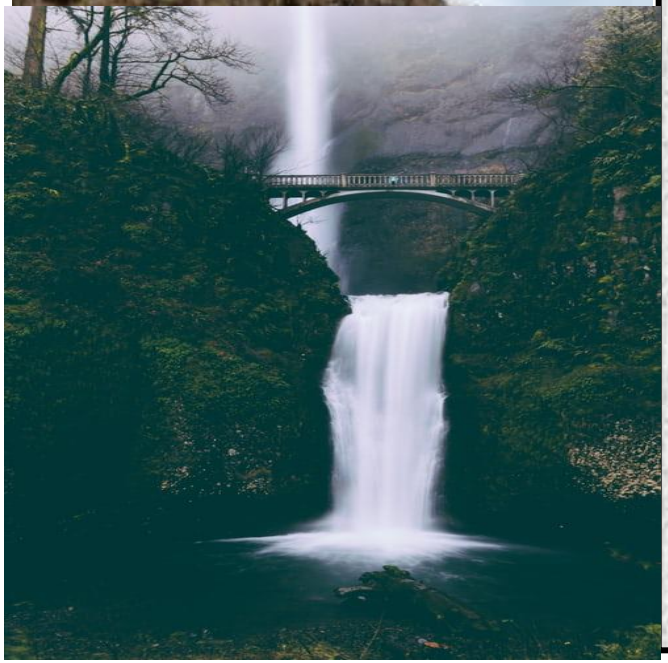

कहाँ ये भागी जा रही हैं ? वह कौन लक्ष्य है जिसने इन्हें बेचैन कर रखा है ? अपने महान पिता का विराट प्रेम पाकर भी इनका हृदय अतृप्त ही है तो वह कौन होगा जो इनकी प्यास मिटा सकेगा! बरफ़ जली नंगी पहाड़ियाँ, छोटे-छोटे पौधों से भरी घाटियाँ, बंधुर अधित्यकाएँ, सरसब्ज़ उपत्यकाएँ- ऐसा है इनका लीला निकेतन! खेलते-खेलते जब ये ज़रा दूर निकल जाती हैं तो देवदार, चीड़, सरो, चिनार, सफ़ेदा, कैल के जंगलों में पहुँचकर शायद इन्हें बीती बातें याद आती करने का मौका मिल जाता होगा। कौन जाने, बुढ्ढा हिमालय अपनी इन नटखट बेटियों के लिए कितना सिर धुनता होगा! बड़ी-बड़ी चोटियों से जाकर पूछिए तो उत्तर में विराट मौन के सिवाय उनके पास और रखा ही क्या है ?

सिंधु और ब्रह्मपुत्र – ये दो ऐसे नाम हैं जिनके सुनते ही रावी, सतलुज, व्यास, चिनाब, झेलम, काबुल (कुभा), कपिशा, गंगा, सरयू, गंडक, कोसी आदि हिमालय की छोटी-बड़ी सभी बेटियाँ आँखों के सामने नाचने लगती हैं। वास्तव में सिंधु और ब्रह्मपुत्र स्वयं कुछ नहीं हैं। दयालु हिमालय के पिघले हुए दिल की एक-एक बूँद न जाने कब से इकट्ठा हो-होकर इन दो महानदों के रूप में समुद्र की ओर प्रवाहित होती रही है। कितना सौभाग्यशाली है वह समुद्र जिसे पर्वतराज हिमालय की इन दो बेटियों का हाथ पकड़ने का श्रेय मिला!

कठिन शब्द

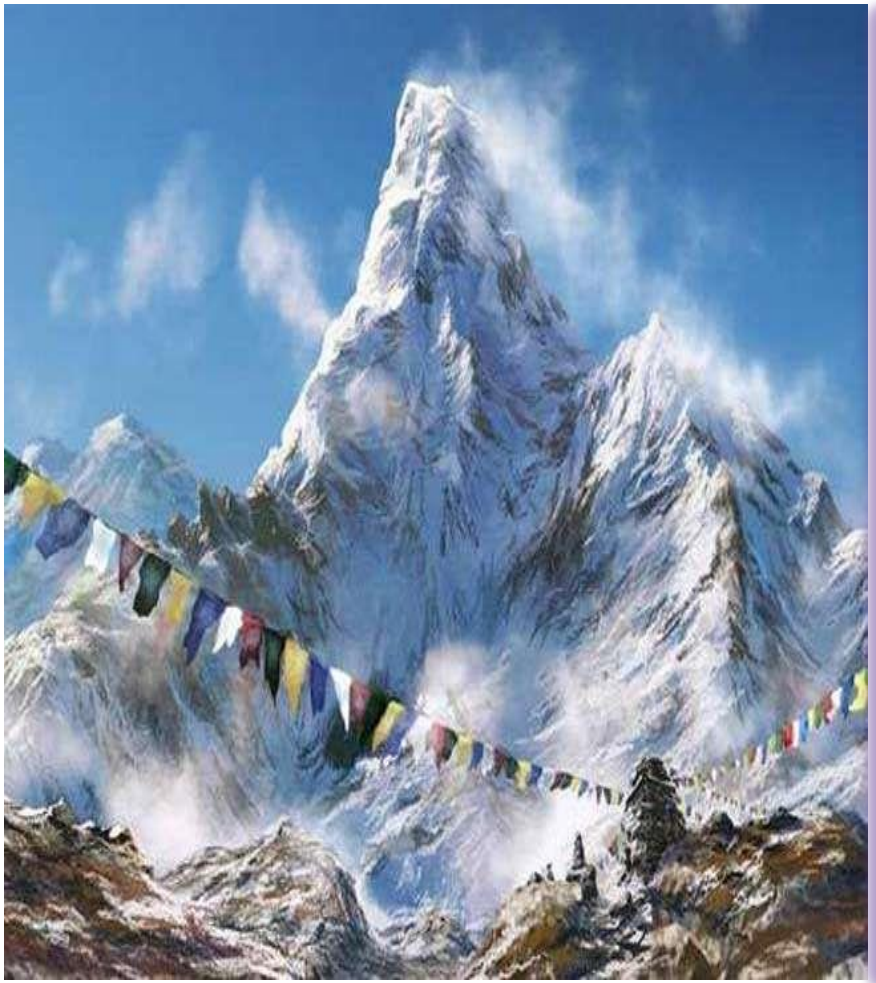

गम्भीर – शांत, संभ्रांत -शिष्ट/कुलीन
श्रद्धा – आदर/विश्वास/ समर्पण
विशाल – बड़ा, उल्लास- खुशी
कौतूहल- जिज्ञासा, विस्मय- आश्चर्य
भाव-भंगी – स्वरूप,लक्ष्य –मंजिल
विराट – बड़ा, अतृप्त – असंतुष्ट
बंधुर – गहरी, मौन- चुपचाप
अधित्यकाएँ – पहाड़ के ऊपर की समतल जमीन
सरसब्ज –हरी-भरी
उपत्यकाएँ–घाटी,सिर धुनना -पछताना
सिवाय-अलावा, श्रेय -सुअवसर